पूर्वोत्तर प्रभा

(सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)

Journal Home Page: **http://supp.cus.ac.in/**

'हर शै बदलती है' कहानी में जीवन के प्रति जिजीविषा

बिद्या छेत्री

शोध छात्रा, हिंदी विभाग

सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक

ईमेल: bidyachhetri524@gmail.com

शोध सारांश: समकालीन कथा साहित्य में युगांतर उपस्थित करने वाली लेखिकाओं में अलका सरावगी का महत्वपूर्ण स्थान है। अपने साहित्यिक कृतियों के द्वारा उन्होंने यथार्थ के विविध पहलुओं को उद्घाटित किया है। अलका सरावगी के यहाँ साधारण जन को महत्त्व मिला है। वे अपनी ही रचना प्रक्रिया पर कहती हैं कि मैंने यह कभी नहीं सोचा था मैं कहानियां भी लिख सकती हूँ लेकिन उन्होंने एक यात्रा के दौरान एक इंसान को जानने की उत्सुकता में 'आपकी हंसी' कहानी लिख डाली जो 'कहानी की तलाश में' संग्रह में संकलित है। उनकी 'हर शै बदलती है' कहानी भी इसी संग्रह में संकलित है। व्यक्ति का अकेलापन, आंतरिक द्वंद्व, कठिन परिस्थितियों में भी जीने की जिजीविषा, स्त्री-पुरुष संबंध, रूढ़ि-परंपरा, आधुनिकता बोध, संयुक्त परिवारों का विघटन, पारिवारिक रिश्तों में खटास, मूल्यहीनता, सांस्कृतिक विघटन, स्त्री शोषण, समाज में हो रहे अमानवीय कृतियाँ, भूमंडलीकरण और बाजारवाद का प्रभाव आदि इनके कथा साहित्य में उभर कर सामने आया है।

सूचक शब्द- समकालीन कहानी, जीवन, द्वंद्व, हर शै, आस्था, जिजीविषा, सकारात्मकता।

मूल लेख

साहित्य का संसार बहुत व्यापक है, जिसमें साहित्यकार अपने अनुभवों को सदैव व्यक्त करता और माँजता रहता है। समाज और उसकी व्यवस्थाएँ सदा से उनके विषय रहे हैं। प्रेमचंद अपने निबंध 'कुछ विचार' में लिखते हैं– "साहित्यकार का लक्ष्य केवल महफिल सजाना और मनोरंजन का सामान जुटाना नहीं है-उसका दर्जा इतना न गिराइए। वह देश-भक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई भी नहीं बल्कि उनके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है।" (प्रेमचंद, 2013, पृ. 20) अत: साहित्यकार अपनी रचनाओं में अपने समाज को प्रस्तुत ही नहीं करता बल्कि उसे नई राह भी दिखाता है, उसकी कलम में अपने युग को प्रभावित करने की अद्भुत क्षमता होती है। अलका सरावगी भी एक युगद्रष्टा लेखिका के रूप में हमारे सामने

आती हैं, उनकी रचनाओं में समकालीन मानव-जीवन के हर पल घटित होने वाली घटनाओं का चित्रण मिलता है।

'हर शै बदलती है' कहानी किसी बड़ी और गंभीर समस्याओं को प्रस्तुत नहीं करती बल्कि वह एक कॉलेज के प्राध्यापिका की साधारण सी समस्या को उजागर करती है। 'कहानी की तलाश में' कहानी की तरह यह कहानी भी समकालीन कहानी के ढर्रे से बिल्कुल अलग तरह की है। कहानी में उपस्थित पात्र का दुःख देखने में साधारण लगता है लेकिन उसका आंतरिक द्वंद्व उसे अंदर ही अंदर तोड़ता रहता है। अलका सरावगी के इस प्रकार की कहानियों को जीवन की कहानियाँ कह सकते हैं क्योंकि इनमें जीवन के सूक्ष्म से सूक्ष्म संवेदनाओं और रोज़मर्रा की चीजों को बखूबी उजागर किया गया है।

'हर शै बदलती है' कहानी यह अहसास कराती है कि आखिर हर दिन एक नया दिन होता है और यह अनुभव अत्यंत विरल है, जो व्यक्ति के अंदर नई स्फूर्ति और जीवन के प्रति आस्था जगाता है। लेखिका ने स्वयं लिखा है- "'हर शै बदलती है' को लिखना मेरे लिए विशुद्ध आनंद का अनुभव था। मेरे ख्याल से यह हर व्यक्ति का अनुभव है कि वह ऐसा सोचता है कि आज से, अभी इसी क्षण से वह जीवन को एकदम नए सिरे से, फिर से जियेगा। यही जिजीविषा है- जीवन के प्रति आस्था- जो कष्टों के बावजूद आत्महत्या से बचाए रखती है। जिजीविषा इसी को परिभाषित करने की, शब्द देने की कोशिश में यह कहानी लिखी गई।" (सरावगी, 1996, भूमिका से) आलोच्य कहानी की पात्र लेक्चरर के साथ-साथ कहानियाँ भी लिखती हैं। वह आधुनिक युग की अत्यंत भावुक और संवेदनशील स्त्री है। उसके अंदर भावुकता और व्यवहारिकता में सामंजस्य स्थापित न कर पाने के कारण द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न हो गयी है। उसके मन में अनेक प्रकार की दुविधाएँ उत्पन्न होती रहती है। उसके पति ने उससे कहा था कि उसका स्वभाव बहुत खराब है। पति के ऐसा कहने पर उसे दुःख तो बहुत होता है लेकिन वह उदास होना नहीं चाहती क्योंकि कुछ दिन पहले उसके पति ने ही कहा था कि वह उसके अच्छे स्वभाव के कारण ही उसे बहुत चाहता है। इस प्रकार वह उदास होकर भी अपने अंदर सकारात्मकता को बचाए रखना चाहती है।

लेखिका ने इस कहानी में आज के अतिरंजित समाज के कटु सत्य को सामने रखने का प्रयास किया है। वे लिखती हैं, "पहले कोई कहता था कि भला सभा में दस लाख आदमी थे तो सुनने वाला सोचता था कि दो लाख तो रहे ही होंगे पर अब तो वह यह भी सोच सकता है कि सभा हुई भी होगी या नहीं।" (सरावगी, 1996, पृ. 15) यह समय के साथ बदलते व्यक्ति और समाज की सच्चाई है। कहानी में समय के साथ अपना रंग बदलते श्रीवास्तव जी का भी चित्रण हुआ है जो अपने फायदे के लिए अपनी जुबान से मुकर जाते हैं। जो राजनीति-विरोधी कविताएं लिखा करते थे अब उसी राजनीति की प्रशंसा किया करते है क्योंकि वे शिक्षा से संबन्धित किसी राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष बनाए जानेवाले है, "मुझे हमेशा ऐसा लगता रहा कि श्रीवास्तव जी हमारी संस्कृति और पहचान के विखंडित होने का कारण हमारे देश की राजनीति में देख पा रहे हैं। मुझे लगता था कि ऐसी दृष्टि आज किसी कवि की नहीं है कि वह बता सके कि हमने किस तरह का एक भ्रष्ट समाज बनाया है, जिसमें आदमी या तो चोर बन सकता है या बहरा-गूँगा-पागल या भीखमंगा। तुम्हें मालूम है कि आजकल श्रीवास्तव जी जब भी मुँह खोलते हैं तो उनकी जुबान से कभी गवर्नर का नाम टपक पड़ता है तो कभी संस्कृति

मंत्री का।" यह बहुत गंभीर समस्या है जो देश को पतन की और ले जा रहा है। हमारी भ्रष्ट राजनीति के जिम्मेदार भ्रष्ट नेता ही हैं जो पल-पल रंग बदलते हैं। लेखिका के बहरा-गूंगा-पागल कहने से तात्पर्य यह है कि आज व्यवस्था के प्रति कोई आवाज़ उठा नहीं सकता अगर उठा भी तो उसे दबाने का तिकड़म शुरू हो जाता है। भलाई इसी में होती है कि सब चुप रहकर सब कुछ देखते रहे। कथा नायिका को समाज की ऐसी स्थिति अंदर ही अंदर पीड़ा पहुंचाती है। उसे संसार का दोगलापन बिल्कुल नापसंद है लेकिन अपने स्वभाव के विपरीत जाकर अपने पति के ख़ुशी के लिए उसे श्रीवास्तव जी के घर जाना पड़ता है। पहले तो वह उनकी कविताओं की प्रशंसा किया करती थी लेकिन अब उसे उनका रंग बदलना बेहद खलता है। लेखिका ने कहानी में स्वार्थ के कारण अंधे हो रहे लोगों का चित्र बखूबी खींचा है, आलोच्य कहानी की नायिका में परिस्थितियों से न लड़ पाने की छटपटाहट साफ ज़ाहिर होती है। अपनी पुरानी मित्र मीनाक्षी (वकील) से भी उसका मन-मुटाव हो जाता है क्योंकि उसकी मित्र उसके कॉलेज में पढ़ाने वाली प्राध्यापिका की बार-बार खिल्ली उड़ाया करती थी। जब उसकी हरकतें पसंद नहीं आई तो उसने उससे अपनी दोस्ती ही तोड़ दी। इस पर वह सोचती है, "अचानक ऐसा क्यों हो जाता है कि कोई बिल्कुल असह्य हो जाता है? बरसों तक हम जिन बातों को अनदेखा करते रहते हैं, वे अचानक इतनी बड़ी क्यों हो जाती हैं कि लगने लगता है कि मरें चाहे जिएं पर और आगे साथ नहीं चला जा सकता?" (सरावगी, 1996, पृ. 17) वह स्वयं नहीं समझ पाती है कि वह ऐसा क्यों कर रही है क्योंकि उसके अंदर वास्तविकता को न स्वीकार पाने की पीड़ा है। वह कई बार परिस्थितियों से न लड़ पाने के कारण निराश, हताश और उदास भी हो जाती है परंतु सोमवार आते ही उसके मन में नई उमंग भर जाती है और वह फिर से अपने जिंदगी को नए सिरे से शुरू करने के लिए तत्पर हो उठती है, "आज सोमवार है और मुझे लग रहा है कि आज से ज़िंदगी की नई शुरुआत की जा सकती है। ज़िंदगी फिर से नई हो सकती है।" (सरावगी, 1996, पृ. 18) इस तरह कहानी की नायिका को सोमवार का दिन ज़िंदगी को नए ढंग से जीने की ताजगी दे जाता है। इस प्रकार की ताजगी आज के व्यस्तता से भरे जीवन में काफी आवश्यक है। बीसवीं सदी के अंतिम दशक में लिखी गई इस कहानी की प्रसांगिकता आज काफी बढ़ गई है।

'हर शै बदलती है' कहानी के शीर्षक से यह स्पष्ट होता है कि जीवन हर समय बदलता रहता है, परिवर्तन ही संसार का नियम है। जीवन में अनेक कठिन परिस्थितियाँ आती रहती है लेकिन वह समय के साथ बदल जाता है। स्थायित्व कहीं नहीं है, अत: हमें भी विषम परिस्थितियों से हार न मानकर हर दिन को एक नए दिन की तरह देखना चाहिए जिससे ज़िंदगी आसान हो जाएगी। मधुरेश इस कहानी के संबंध में 'हिन्दी कहानी का विकास' में लिखते हैं– "'हर शै बदलती है' जिजीविषा और स्वस्थ सामाजिक मूल्यों की कहानी है।" (मधुरेश, 2014, पृ. 194) यह कहानी समकालीन समाज में मनुष्य में फैले नकारात्मकता, निराशा, उदासी, प्रतिशोध की प्रवृत्ति, हीनताबोध और पीड़ा के बीच सकारात्मकता का भाव जागृत करता है। यह कहानी लोगों में जिजीविषा उत्पन्न करते हुए यह सीख देती है कि कोई भी समस्या जीवन से बड़ा नहीं होती है। बंगला के प्रसिद्ध नाटककार बादल सरकार के 'पगला घोडा' नाटक के अंत में कार्तिक बाबू का सवाल-"जिंदा रहने से सब संभव हो सकता है?" (सरकार, 1995, पृ. 120) आलोच्य कहानी के कथ्य को और भी स्पष्ट और जीवंत

बनाता है। इस प्रकार कई रचनाकारों ने साहित्य के विविध विधाओं के माध्यम से आधुनिक परिवेश में टूटते-बिखरते लोंगों में नई उमंग भरने का भरसक प्रयास किया है।

आलोच्य कहानी का मूल उद्देश्य लोगों में जीवन के प्रति आस्था जगाना है। लेखिका का भी यही मानना है कि हर दिन को नया दिन मानकर नए सिरे से जीवन की शुरुआत करनी चाहिए। कथा नायिका में भी सबसे महत्त्वपूर्ण बात है, 'जीवन के प्रति आस्था' जिसके कारण वह उदास होते हुए भी अपने को समय के साथ ढलने का प्रयत्न करती है। इस कहानी में लेखिका ने मनोवैज्ञानिक ढंग से कथानायिका के मनोभावों का चित्रण किया है। यह कहानी अपनी मनोवैज्ञानिकता और आधुनिक बोध के कारण नई कहानी की याद दिलाती है। आज समय इतना बदल गया है कि व्यक्ति स्वार्थवश कुछ भी करने को तैयार हो जाता है। वह सही गलत में फर्क नहीं कर पाता है। अलका सरावगी की यह कहानी नकारात्मकता के बीच सकारात्मक भाव बोध पैदा करने का माद्दा रखती है। मनुष्य का जीवन बहुत सुंदर और अमूल्य है जिसे नष्ट करना मूर्खता है, आखिर जिंदगी हर शै में बदलती है। अत: दुःख के बाद सुख की कल्पना कर जीवन को सही तरीके से जिया जा सकता है। जब कुछ भी स्थायी नहीं तो फिर दुःख के बादल छंट जाएंगे, प्रतिकूल समय बदल जाएगा इस भावबोध के साथ यह कहानी आगे बढ़ती है। लेखिका ने सकारात्मक भाव बोध के महत्त्व को रेखांकित करते हुए जीवन के प्रति आस्थावादी चिंतन को विकसित करने की चेष्टा की है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

प्रेमचंद. (2013). कुछ विचार. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन.
सरावगी, अलका. (1996). कहानी की तलाश में. नई दिल्ली: राजकमल. (अपनी बात से)
मधुरेश. (2014).हिन्दी कहानी का विकास. नई दिल्ली: राजकमल.
सरकार, बादल. (1995). (अनु- प्रतिभा अग्रवाल). पगला घोड़ा. नई दिल्ली: राजकमल.